इंडियन स्कूल सलालाह

हिंदी विभाग

बालपत्रिका 2021

<u>अपनी ओर से</u>

हमें हिंदी दिवस के अवसर बाल पत्रिका का तीसरा संस्करण प्रकाशित करते हुए बड़ी प्रसन्नता हो रही है। सभी महान शिक्षाविदों का मानना है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल रटंत क्षमता को बढ़ाना न होकर छात्रों की मौलिकता वं सृजनात्मकता का विकास होना चाहिए। इसमें कोई संदेह नहीं कि यह बाल पत्रिका इस दिशा में एक महत्त्पूर्ण कदम होगी। इस अवसर पर हम इंडियन स्कूल सलालाह के प्रबंधक समिति के अध्यक्ष डॉ. सैयद अहसन जमील जी का हिंदी विभाग की ओर से हार्दिक आभार प्रकट करते हैं क्योंकि उन्हीं की प्रेरणा से पहली बाल पत्रिका प्रकाशित की गई थी। । प्रधानाचार्य श्री दीपक पाटणकर जी, जो हमारे हर कार्य में मार्गदर्शक रहे, उनके अनुपम योगदान के लिए हम अपने हृदय की गहराइयों से धन्यवाद देना चाहते हैं। इनके अलावा प्रबंधक समिति के हर सदस्य का योगदान भी समय-समय पर मिलता रहा, हम प्रबंधक समिति के प्रत्येक सदस्य का आभार व्यक्त करते हैं। हम उन सभी हिंदी सेवियों को धन्यावाद देना चाहते हैं जिन्होंने इस बाल पत्रिका को सजाने-सँवारने में काफ़ी योगदान दिया। हिंदी शिक्षकों का यह प्रयास सचमुच सराहनीय है। हमें पूरी आशा है कि यह बाल पत्रिका हमारे नन्हे-मुन्ने लेखकों के लेखन कौशल को विकसित करने में सहायक सिद्ध होगी।

एन. बालसुब्रमणियन

हिंदी विभागाध्यक्ष

<u>संदेश</u>

सुप्त बीज के अंतर-घट से, एक दिवस यह वृक्ष बनेगा।
सरदी-गरमी को सह-सहकर, महासृजन का फूल खिलेगा।।

हाँ, बीज की आत्मा में सृजन का भविष्य सोया रहता है। प्रकृति की प्रेरणा उस बीज को इस संसार में जगाने का कार्य करती है। संभवत: यही भूमिका विद्यालय के शिक्षकों की भी होती है। बाल्यावस्था में ही सृजन के संस्कार रोपित किए जाते हैं। शिक्षक इस सृजन को विकास-पथ पर ले जाकर परिमार्जित करने का कार्य करते हैं। हिंदी बाल-पत्रिका का तीसरा संस्करण देखकर मैं इसी भाव-भूमि पर खड़ा होकर अपने विद्यालय के शिक्षकों और बच्चों के विषय में यही सोच रहा हूँ। यह बाल-पत्रिका देखकर मेरा मन बहुत ही प्रफुल्लित और उत्साहित है। हिंदी विभाग के सभी शिक्षकों तथा विभागाध्यक्ष की इसमें कठोर मेहनत परिलक्षित होती है। बच्चों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से इस संस्करण को अद्भुत बना दिया है। पत्रिका में बच्चों ने लेख, कहानी, कविता और पहेली आदि रचनाओं से अपनी मौलिक सृजनता का सुंदर परिचय दिया है। पत्रिका की रचनाओं के माध्यम से मुझे भी इन प्यारे-प्यारे बच्चों की सुखद रचना संसार और भावनालोक में डुबकी लगाने का सुअवसर मिला। मैं उन सभी बच्चों को हृदय की गहराइयों से शुभकामनाएँ देता हूँ, जिनकी रचनाएँ बाल पत्रिका के तीसरे संस्करण में प्रकाशित हो रही हैं। बच्चों आप हमारे भविष्य के रचनाकार हैं। पत्रिका की रचनाओं को देखकर लगता है कि बच्चों में अथाह रचनात्मक क्षमता है। मेरा विश्वास है भविष्य में इन्हीं प्रयासों से ही आधुनिक सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', जयशंकर प्रसाद और महादेवी वर्मा का पुन: जन्म होगा। मैं पुन: इन बच्चों की रचनाओं और हिंदी विभाग के इस प्रयास की सराहना करते हुए अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ। आशा करता हूँ कि भविष्य में भी हिंदी विभाग इस प्रकार के प्रयास सतत जारी रखेगा।

डॉक्टर. सैयद अहसन जमील

अध्यक्ष

विद्यालय प्रबंधक समिति

इंडियन स्कूल सलालाह

उपकुलपति, दोफ़ार विश्वविद्यालय, सलालाह

प्रधानाचार्य की ओर से !

हमें पता है कि वर्तमान युग चुनौतियों से पूर्ण है। इसमें कोई शक नहीं कि एक ओर विज्ञान के आधुनिकसंसाधन जीवव को सुविधापूर्ण बना रहे हैं तो दूसरी ओर ये ही साधन छात्रों की सृजनात्मकता एवं मौलिकता को सीमित कर रहे हैं। छात्रों की सृजनात्मकता, मौलिकता एवं कल्पनाशीलता को जीवित रखने का प्रयास है - बालपत्रिका। इस दिशा में हिंदी विभाग का काम काफ़ी सराहनीय है। बालपत्रिका के इस तीसरे प्रकाशन पर हमारे नन्हे लेखकों एवं कवियों को बधाई देता हूँ तथा ईश्वर से मेरी प्रार्थना है कि इनकी प्रतिभाएँ उत्तरोत्तर विकसित हों। मुझे पूरा विश्वास है कि भविष्य में ये छात्र अपने माता-पिता, देश तथा विद्यालय का नाम रोशन करेंगे।

दीपक पाटणकर

प्रधानाचार्य

इंडियन स्कूल सलालाह

माँ

कौन है तुम जैसी!
जो सबको प्यार करती,
दिन-रात सेवा करती,
और सिर्फ हमारे लिए सोचती हो |

भगवान को नहीं हम देख पाते,
परंतु तुम हमारे जीते ईश्वर हो!
दिन रात हमारी सेवा में
अपना नहीं कुछ कर नहीं पाती।|

मिलती है शांति तुम्हारी गोद में ,
उड़ जाता है दुख सारा तुम्हारी सुसकुराहट में,
हमें प्यार करने वाली देवी हो तुम,
इसलिए यह दुनिया तुम्हें कहती है माँ!!

जोसफ़ रेज़ल रेयान
दसवीं कक्षा - एफ

उम्मीद

माना छाया है पूरी दुनिया पर मुसीबतों का जाला,

पर अंधेरी रात के बाद आता ही है दिन का उजाला।

इस महामारी से जूझ रहा है संसार सारा,

कोरोना ने हर कोने में पाँव है पसारा।

जहाँ देखो मुसीबतों से घिरा है इंसान,

न जाने कितनों की बेमौत गई है जान

स्वास्थ्य कर्मी लड़ रहे हैं

मुसीबतों से जूझ रहे हैं,

अर्थव्यवस्था हिल चुकी है,

नौकरी कइयों की छिन चुकी है।

वैक्सीन कब सब तक पहुँचकर,

शुरू करेंगी अपना काम।

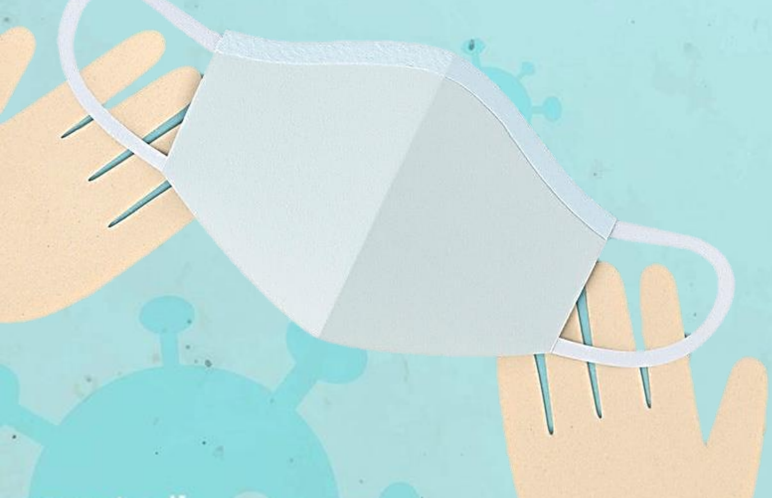

उम्मीद सबको है यही,

सब कुछ फिर से होगा सही।

हम बच्चों की जिंदगी,

घर तक सीमित हो गई,

खेलकूद बंद हो गया है-

बाहर घूमना भी मना है

स्कूल के दिन याद आते,

जब अध्यापकों की डाँट खाते,

दोस्तों के साथ हँसते-हँसाते-

स्वादिष्ट टिफिन और किताबों से भरे बस्ते।

याद आता है वह ब्लैकबोर्ड और अपनी क्लास

ऑनलाइन क्लास में कहाँ वह बात,

उम्मीद हमें है बस यही,

सब कुछ जल्दी होगा सही।

क्योंकि हर अंधेरी रात के बाद,

आता ही है दिन का उजाला।।

अमोघ
दसवीं कक्षा - फ

<u>एक वक्त में एक काम</u>

है काम के वक्त काम अच्छा,
और खेल के वक्त खेल अच्छा।
जब काम का वक्त हो काम करो,
भूल से भी खेल का नाम न लो।
हाँ खेल के वक्त खूब खेलो,
कूदो-फांदो और दंड पेलो।
खुश रहने का यही तरीका,
हर बात में चाहिए सलीका।
हिम्मत को न हारो,
मत ढूँढो दूसरों का सहारा,
अपने बूते पर काम करना
मुश्किल होतो न चाहिए डरना।
छोड़ो नहीं काम को अधूरा,
बेकार है वह काम जो न हुआ पूरा
है काम के वक्त काम अच्छा,
और खेल के वक्त खेल अच्छा।

मोहम्मद अर्श आज़म मलिक

कक्षा-पाँचवी-ब

भ्रूण हत्या

माँ के गर्भ में कन्या, कर रही करुण पुकार,

मुझे भी आने दे जग में, पहले ही मत मार।

सुन ले विनती माँ मेरी, मैं हूँ तेरा अंश,

गर्भ में मुझे मार कर, क्या चलाना वंश।

एक लड़के की चाहत में करती मेरा मोल,

मैं तेरा ही रूप हूँ, तू अंदर के पट खोल।

क्यों हत्या पर है तुली, क्या तेरी लाचारी?

बेटा- बेटी एक-से, माने दुनिया सारी।

भाई को अवसर दिया, देकर मुझे भी देख,

ताकत का भण्डार मैं, बदलूँ भाग्य की रेख।

खोल दे बंधन माँ मेरे करदे पूरी आस,

बनूँ कल्पना एक दिन, छू लूँगी आकाश।

मैया तेरे आँगन की, मैं हूँ ऐसी गाय,

जिस खूंटे से बाँध दो, प्रेम से बंध जाय।

केशवी शर्मा

दसवीं कक्षा - फॉ

एक सुंदर दिन

सूर्योदय से शुरु हुआ
मेरा एक सुंदर दिन
चिड़िया खिड़की के बाहर
गाए गाने विभिन्न।
खिले हुए फूल,
हवा में लहरा रहे हैं।
बारिश की बूँदें
पत्तों पर झिलमिला रही हैं।
खुशी के साथ गाने हँसने के लिए
यह है एक सुंदर दिन।
परिवार के साथ बिताने के लिए
यह है सुंदर दिन।

कैतलियन

पाँचवीं कक्षा - अ

कोरोना

सब कुछ था ठीकतुम्हारे आने से पहले।
ले लिया है दुनिया को अपनी चपेटों में
डरते हैं हम सब तुम्हारे नाम से
कैसे बचें हम तुम्हारे जाल से।

मास्क न पहनोतो मार देता है। ,
घर से निकलो तो घेर लेता है
किससे सहा जाता है इतना दर्द।
क्या हम भी जीव नहीं?

डॉक्टर पुलिस और अन्य कर्मचारी
हम हैं इनके आभारी।
कर रहे हैं सेवा बिना डर के।
क्या दया नहीं आती तुम्हें इनपर?

पूरी दुनिया में मचा रहे हो तबाही।
अब बस करो तुम अपनी मनमानी,
किसी को नहीं छोड़ा है तुमने।
क्या तुम्हारा इस दुनिया में कोई नहीं?

अब बहुत हो गया तुम्हारा राज।
निकलो दुनिया से तुम आज के आज।
मानव जाति मिलकर तुम्हें हराएगी।
दुनिया को बचाने का फ़र्ज़ निभाएगी।

विदुला महेश
दसवीं कक्षा - 'ज'

एक शिक्षक ने अपने छात्रों से कहा कि वे होमवर्क के रूप में ट्रेन की तस्वीर खींचें और अगले दिन उसे दिखाएँ । सभी छात्रों ने एक लड़के को छोड़कर तस्वीर दिखाई। उसने उस लड़के से पूछा कि उसने ट्रेन क्यों नहीं खींची । लड़के ने जवाब दिया टीचर, आप पाँच मिनट लेट हैं। ट्रेन पहले ही रवाना हो चुकी है।

पृथिव वेंकटेश

दसवीं कक्षा – ज

पाँच उँगलियाँ

यह मानव की उन दिनों की बात है जब मानव अभी पैदा ही हुआ था। हाथ की उँगलियों में लड़ाई चल रही थी कि कौन-सी उँगली सर्वश्रेष्ठ है। अंगूठे ने उन्हें समझाने की बहुत कोशिश की पर कोई भी नहीं माना। गुस्से में आकर अंगूठे ने कहा ठीक है, जो तुम लोगों में से अकेले सबसे ज्यादा काम कर पाएगा वही सर्वश्रेष्ठ कहलाएगा। सभी ने यह बात मान ली। उसी दिन से सभी ने बहुत कोशिश की लेकिन चारों में से कोई अकेले कुछ काम नहीं कर पाया। कई दिनों की कोशिश के बाद उन्होंने अंगूठे से कहा, हमें माफ कर दो। हमें समझ में आ गया है कि हम अकेले कोई काम नहीं कर सकते। अंगूठे ने उन्हें माफ कर दिया और यह बात दोहराने से मना किया।

शिक्षा - हमें एकता में रहना चाहिए और काम में अपने रिश्तेदारों तथा मित्रों का साथ लेना चाहिए।

अद्वय अग्रवाल
आठवीं कक्षा - ब

माँ

माँ की अच्छी सूरत है,

माँ ममता की मूरत है।

माँ ओ माँ ओ माँ,

माँ सबसे सुन्दर है।

सबसे प्यारी लगती है।

माँ ओ माँ ओ माँ,

तू है सबसे अच्छी माँ,

सबसे अच्छी, सबसे प्यारी,

तेरी आँख में लगता दिल,

सबसे सुन्दर, सबसे न्यारी

तू ही सबसे प्यारी, प्यारी

माँ ओ माँ ओ माँ.......

धैर्या शर्मा

तीसरी कक्षा - ई

सबक

एक लड़का था। उसका नाम राम था। वह अपने माता-पिता के साथ रहता था। उसे बाहर की चीज़ें खाने की बुरी आदत थी। उसे दूध और पानी के बदले कोको-कोला पीना पसंद था और खाने में जंक फूड पसंद था। जब भी उसकी माँ उसे दूध देती थी, वह उसे बाहर फेंक देता और खाना गुलदस्ते में फेंक देता था। इस वजह से वह कमज़ोर हो गया था। उसके माता -पिता को राम की चिंता होने लगी। पर वह किसी की भी नहीं सुनता था। एक दिन उसके माता-पिता ने शिक्षिका से मिलकर सारी बात बताई। शिक्षिका को एक उपाय सूझा। उन्होंने रंग-बिरंगा फूल का पौधा राम को देने के लिए दिया। राम ने पौधे में डालने के लिए पानी माँ से माँगा। तभी माँ ने उससे कहा -'बेटा तुम्हें कोका-कोला पसंद है तो तुम पौधे में कोका- कोला डाल दो, क्योंकि पौधे को भी वह पसंद आएगा।' दूसरे दिन पौधा मुरझा गया। राम ने खाद माँगी। उसे लगा पौधा वापस उग जाएगा। तभी माँ ने उसे चिप्स और फ्राईस डालने को कहा। उसने छोटे टुकड़े करके पौधे में डाल दिया। अगले दिन पौधा और मुरझा गया। वह बहुत दुखी हो गया। फिर माँ ने उसे समझाया-'पौधे को बड़ा होने के लिए पानी और खाद की जरूरत होती है, वैसे ही शरीर को स्वस्थ रहने के लिए पौष्टिक आहार की ज़रूरत होती है।' यह सुनकर राम को अपनी गलती का अहसास हो गया। उस दिन से वह पौष्टिक खाना खाने लगा और तंदुरस्त हो गया।

शिक्षा – जंक फूड़ सेहत के लिए हानिकारक है।

प्रियल मनीष

तीसरी कक्षा - एच

नफ़रत

ना जाने आज इंसान ने क्या बना ली फितरत|
भर गया है उसमें जहर जिसे कहते हैं हम नफ़रत|
गर्त का यह द्वार है ईर्ष्या की सांकले......
मत बना इस नफरत को तू प्रतिफल अपनी हसरत।

चल रही यह कैसी अजब नफ़रत की आंधी है
खून दौड़ता जब सबकी रगों में एक है
तो कहाँ से उत्पन्न होता नफरत का आवेग....
किसकी साजिश का हम हो रहे हैं शिकार।

ऊपर वाले ने तो बनाया हम सब को एक है।
खून के रंग से ही अब तू कर ले पहचान
ईश्वर ने बनाया जब सब को एक समान......
मोहब्बत का अब दे दे मानव, मानव पैगाम|

आर्यमान कुमार
नवीं कक्षा - स

करोना योद्धा

हर कोई एक योद्धा है
खाली सबके कार्य अलग हैं
हथियार नहीं है तो क्या सबके पास विश्वास है ना
लो छिड़ गया है युद्ध करोना
पूरा विश्व है आज इससे परेशान
हमें डरना नहीं चाहिए
वह कोरोना है तो हम मानव हैं
आज साथ ना होकर हम एक साथ
युद्ध में योद्धाओं के अलग अलग काम होते हैं-
हर कोई युद्ध मैदान में नहीं जाता
अपने कर्तव्य करे तो वह योद्धा कहलाता है.
तो आइए एक करोना योद्धा बने
इस करोना की पहचान को मिटा दें।

सना
नवीं कक्षा – अ

हाथी आया

हाथी आया, हाथी आया।
सूंड हिलाता हाथी आया।
चलता फिरता हाथी आया।
झूम-झूमकर हाथी आया।
कान हिलाता हाथी आया।

वासुदेव
तीसरी कक्षा - ब

बेटी

किसी के कंधे पर बैठी

किसी की गोदी में खिली
सब ने बताया मुझको
तू है इस दुनिया में अलबेली।
सब कहते हैं मुझको
तू जान से ज़्यादा प्यारी
मुझे कितने प्यारे सब
आज बताने की है बारी
बचपन में अकसर रातों को
दादी कहानी कहती थी
तब कितना अच्छा था सब कुछ।
चाँद पर परियाँ रहती थी
अपनी किताबें छोड़
मैं उसकी किताबें पढ़ती हूँ।
नए बहाने रोज़ लगा
छोटे भैया से लड़ती हूँ।
आज नहीं तो कल मेरे यहाँ से जाने के बाद
आएगा, ससुराल मेरा सबसे अच्छा
पर मायका याद तो आएगा।
बेटी इस दुनिया में सबसे प्यारी।।

जिनल,
सातवीं कक्षा - अ

पर्यावरण हमारा सच्चा मित्र

जल देता फल देता,

देता निर्मल छाँव है

पंछियों की किलकि ला देता,

देता सुंदर गाँव है।

पथ-पथ पर डग-डग पर दिया हमारा साथ जिसने,

पर्यावरण तुझमें पाया एक सच्चा मित्र हमने।

पेड़ पौधे हरियाली,

समुद्र और नदियों ने दी जल की लाली

बसेरा दिया सभी जीवों को,

घर-घर तुमसे खुशहाली।

बहुत किया प्रदूषित तुम्हें,

कितने लिए बैर

न जल छोड़ा न थल छोड़ा।

कितने काटे पेड़।

संकल्प करते हैं जो दिया तूने,

उसकी कीमत जानेंगे

एक सच्चा साथी बनकर तुम्हारी रक्षा करेंगे।

अंश ओरा

पाँचवीं कक्षा - अ

सूरज की देन

कितने किलो धूप धरती पर
सूरज है फैलाता
ठेले पर कंधे पर रख
संग धूप को लाता ।
कैसे रोज़ समेटे इसको
वापस यह ले जाए
कोई रिक्शा, कोई गाड़ी,
मुझे नज़र न आए।
या फिर सबको छोड़ यही पर
रोज़ नई ले आता,
पहले वाली धूप बुझा फूँक कर
सूरज गुम हो जाता।

आफ़्रीन खान

आठवीं कक्षा - अ

<u>हँसी के फव्वारे</u>

एक बालक हाथों के बल चलकर घर में दाखिल हुआ।

पापा - ये कैसे चल रहे हो?

बालक - आपने ही तो कहा था कि आगर परीक्षा में पास न हुए तो घर में कदम न रखना।

मेहमान - बेटा, तुम्हारा नाम क्या है?

बच्चा - मेरा नाम अमर है और मुझे गुलाब जामुन बहुत पसंद है।

मेहमान - तुम्हारे भाई का क्या नाम है?

बच्चा - उसका नाम अमित है और उसे रसगुल्ले बहुत पसंद है।

मेहमान - तुम्हारी बहन का क्या नाम है?

बच्चा - उसका नाम आरथी है और उसे जलेबी बहुत पसंद है।

मेहमान - अमर तुम सबके नाम के बाद एक मिठाई का नाम क्यों लेते हो?

बच्चा - क्योंकि, मेरी माँ कहती है सब से मीठी-मीठी बातें किया करो...

ज़ाकी सैयद

चौथी कक्षा - स

वर्षा ऋतु

वर्षा आई, वर्षा आई
खुशियाँ लाई,खुशियाँ लाई
बारिश करती झम झम झम
बादल करते धम धम धम।
बारिश में नाचते मोर ही मोर
गली में गूंजे शोर ही शोर
बारिश का मौसम आया,
सबको खूब नहलाया
प्रसन्न होता है सबका मन
गमक उठता है उपवन।
गलियों में नदी बहती जाए
बच्चों को खूब नहलाए।
हर तरफ़ हरियाली छा जाती
मीठी-मीठी कोयल गाती
बारिश है सबको भाती
खुशी और मुस्कान लाती।

सादिया सईद
नवीं कक्षा - अ

भारत महान

ऐसा है देश हमारा

सारे जग में है सबसे प्यारा।

तिरंगा झंडा है इसकी आन

जिसके लिए कुर्बान यह जान।

चंद्रगुप्त, अशोक, शिवाजी, महाराणा प्रताप महान

हर युग में जन्मे हैं भारत-पुत्र, वीरों की आन।

आध्यात्म से विज्ञान का रास्ता निकाल लाए

संस्कृति और आधुनिकता का समायोजन कर पाए।

नव युग में भी भारतवासी हर जगह हैं छाए

परमाणु से अंतरिक्ष तक सर्वोत्तम कहलाए।

विश्व भर में बनता है यह अनेकता में एकता की मिसाल

इसमें है बसी अनेक संस्कृतियाँ और बोल-चाल।

हर भारतवासी की बसती है इसमें जान

तभी तो कहलाता है यह भारत महान।

करिश्नी भरद्वाज

दसवीं कक्षा - ज

फूल बनो

जीवन में फूल बनें।
धूल में मिलने से पूर्व,
करना है कुछ कार्य अपूर्व।
धूल में मिलना,
फिर-फिर खिलना,
जीवन नियति है, मिट जाने की,
यही गति है मानव-तन की।
फूल की तरह झरने से पहले,
हाँ, हाँ जाने से पहले,
रस-गंध बिखेरनी है।
सुवासित करना है
धरती का कोना-कोना।
जीवन की सार्थकता है फूल होना,
फूल की तरह मुसकान को
जीवन में जीवंतता देना।
फूल टूटते हैं, सहते हैं,
निष्ठुर हाथों का कठोर प्रहार,
फिर भी हंसते हैं, नहीं मानते हार।
पत्थर पड़े रहते हैं औंधे मुँह,
न हंसते हैं, न रोते हैं।
फूल पत्थर की गोद में उगकर,
जीवन का देते हैं मधुर संदेश,
महका देते हैं पूरा परिवेश।
काँटे रहते हैं शाख पर
बरसों-बरस,
केवल देते हैं चुभन।
फूल कुछ दिनों ही जीते हैं,
मगर बिखेरते हैं सदा मुसकान।
मित्रो! जीवन की यही है पहचान।
तो काँटे न बनो, पत्थर न बनो,
बस फूल बनो
फूल-सी मुसकान वरो,
लघु जीवन को सार्थक करो।
फूल बनो, बस फूल....

सीमा जस्टिन, हिंदी शिक्षिका

इंडियन स्कूल सलालाह - ओमान